First 6/C

GOVT SV CO-ED A-2PASCHIM VIHAR (1617003)

गुरु तेग बहादुर

श्री गुरु तेग बहादुर जी का जन्म 18 अप्रैल 1621 को अमृतसर में श्री हरगोविंद जी और माता जानकी जी के घर पर हुआ । इन्होंने सिख धर्म की स्थापना की व सिखों के 9वे गुरु के रूप में जाने गए । आप गुरु हरगोबिंद जी के सबसे छोटे सुपुत्र थे । बचपन से ही संत स्वरूप, अडोल, गंभीर और निर्भय स्वभाव के थे । बचपन से ही भक्ति में लीन रहते थे । इनके पिता ने इन्हें पढ़ाई व श्रम सिखाने के लिए बाबा बुड्ढा जी के पास भेजा । यहां इन्हे अन्य सद्गुण प्राप्त करने में मदद मिली ।

इन के बचपन का नाम त्यागमल था, मात्र 14 वर्ष की अवस्था में अपने पिता के साथ मुगलों के खिलाफ हुए युद्ध में इन्होने वीरता का परिचय दिया । इनकी वीरता से प्रभावित होकर इनके पिता ने इनका नाम त्यागमल से तेज बहादुर रख दिया है यानी 'तलवार का धनी' इन्होंने अपने धर्म का प्रचार किया सर्वधर्म समभाव की शिक्षा दी । यह एक महान योद्धा कर्म योगी रहे तथा निडर व आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा दी । उन्होंने आत्मिक, आर्थिक व सामाजिक विकास के लिए कार्य किए । समाज के हित में अनेक कुंए खुदवाये व धर्मशालाएं बनवइ । इन्होंने समाज में रूढ़ियों, अंधविश्वास की आलोचना की । कहते हैं 'कि पूत के पांव पालने' में ही नजर आ जाते हैं इस कहावत को यथार्थ में चरितार्थ सही मायने में इन्होंने किया । आज के आधुनिक युग में जहां एक ओर विज्ञान और तकनीक में विश्व आगे हो रहा है वहीं दूसरी ओर आज हमें इस ओर भी ध्यान देना होगा कि हमें बच्चों को संस्कार व शिक्षा का धनी बनाना है । साथ ही उन्हें देश सेवा, समाज सेवा जैसे गुणों से भरपूर किया जाए । उन्हें ऐसी शिक्षा दी जाए कि वे देश के प्रति अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए ऐसे ही तैयार हो जैसे बचपन से ही श्री गुरु तेग बहादुर जी थे । हमें गुरु तेग बहादुर जी जैसे महापुरुषों की कहानियां बच्चों को पढानी चाहिए ताकि भारतवर्ष का नाम और अधिक रोशन हो ।

द्वारा. आशीष यादव

H.O.S.
Govt.S.K.V.,Shiv Ram Park
Nangloi-1617222